

कुछ शब्द चित्र/ किताबों से...

Gandhi in Literature- An Inspiration...

Gandhi in School...

I must have been about seven when my father left Porbandar for Rajkot to become a member of the Rajasthanik Court. There I was put into a primary school, and I can well recollect those days, including the names and other particulars of the teachers who taught me. As at Porbandar, so here, there is hardly anything to note about my studies. I could only have been a mediocre student. From this school I went to the suburban school and thence to high school, having already reached my twelfth year. I do not remember having ever told a lie, during this short period, either to my teachers or to my school-mates. However, I used to be very shy and avoided all company. My books and my lessons were my sole companions. To be at school at the stroke of the hour and to run back home as soon as the school closed—that was my daily habit. There is an incident which occurred at the examination during my first year at high school and which is worth recording. Mr Giles, the educational Inspector, had come on a visit of inspection. He had set us five words to write as a spelling exercise. One of the words was 'Kettle'. I had misspelt it. The teacher tried to prompt me with the point of his boot, but I would not be prompted. It was beyond me to see that he wanted me to copy the spelling from my neighbour's slate, for I had thought that the teacher was there to supervise us against copying. The result was that all the boys, except myself, were found to have spelt every word correctly. I could never learn the art of 'copying'. Yet the incident did not in the least diminish my respect for my teacher. I was by nature, blind to the faults of elders. Later I came to know of many other failings of this teacher, but my regard for him remained the same. Two other incidents belonging to the same period have always clung to my memory. As a rule I had distaste for any reading beyond my school books. The daily lessons had to be done, because I disliked being taken to task by my teacher as much as I disliked deceiving him. Therefore I would do the lessons, but often without my mind in them. Thus, when even the lessons could not be done properly, there was of course no question of any extra reading. But somehow my eyes fell on a book purchased by my father. It was Shravana Pitribhakti Nataka. I read it with intense interest. One of the pictures I was shown was of Shravana carrying, by means of slings fitted for his shoulders, his blind parents on a pilgrimage. The book and the picture left an indelible impression on my mind.

(An excerpt from *The Story of My Experiments with Truth*, Mohandas Karamchand Gandhi)

(Source: *Workbook in English, Class-IX, Words and Expressions 1*, NCERT, Publication)

Indigo

Morning found the town of Motihari black with peasants. They did not know Gandhi's record in South Africa. They had merely heard that a Mahatma who wanted to help them was in trouble with the authorities. Their spontaneous demonstration, in thousands, around the courthouse was the beginning of their liberation from fear of the British.

The officials felt powerless without Gandhi's cooperation. He helped them regulate the crowd. He was polite and friendly. He was giving them concrete proof that their might, hitherto dreaded and unquestioned, could be challenged by Indians.

The government was baffled. The prosecutor requested the judge to postpone the trial. Apparently, the authorities wished to consult their superiors.

Gandhi protested against the delay. He read a statement pleading guilty. He was involved, he told the court, in a "conflict of duties"—on the one hand, not to set a bad example as a lawbreaker; on the other hand, to render the "humanitarian and national service" for which he had come. He disregarded the order to leave, "not for want of respect for lawful authority, but in obedience to the higher law of our being, the voice of conscience". He asked the penalty due.

The magistrate announced that he would pronounce sentence after a two-hour recess and asked Gandhi to furnish bail for those 120 minutes. Gandhi refused. The judge released him without bail.

When the court reconvened, the judge said he would not deliver the judgment for several days. Meanwhile he allowed Gandhi to remain at liberty.

Rajendra Prasad, Brij Kishor Babu, Maulana Mazharul Huq and several other prominent lawyers had arrived from Bihar. They conferred with Gandhi. What would they do if he was sentenced to prison, Gandhi asked. Why, the senior lawyer replied, they had come to advise and help him; if he went to jail there would be nobody to advise and they would go home.

What about the injustice to the sharecroppers, Gandhi demanded. The lawyers withdrew to consult. Rajendra Prasad has recorded the upshot of their consultations — "They thought, amongst themselves, that Gandhi was totally a stranger, and yet he was prepared to go to prison for the sake of the peasants; if they, on the other hand, being not only residents of the adjoining districts but also those who claimed to have served these peasants, should go home, it would be shameful desertion."

They accordingly went back to Gandhi and told him they were ready to follow him into jail. "The battle of Champaran is won".

(Source: Flamingo, Class-IX, Chapter-5 (Indigo), NCERT Publication)

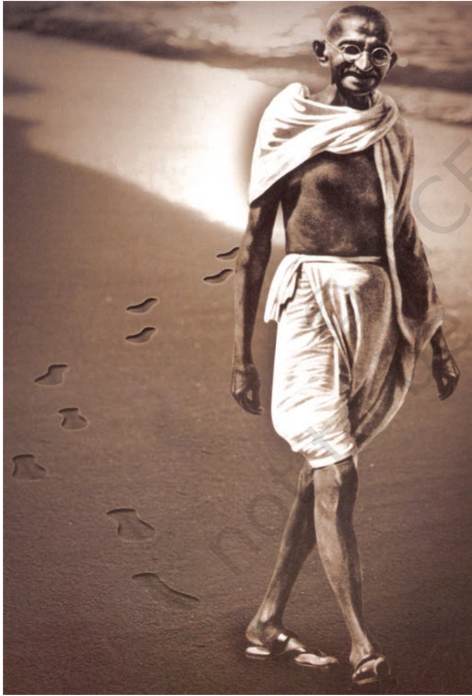


0847CH07



अंतिम दौर – दो

राष्ट्रीयता बनाम साम्राज्यवाद
मध्य वर्ग की बेबसी – गांधी का आगमन



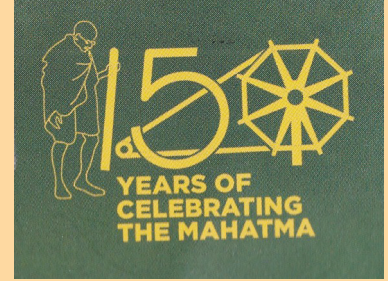
महात्मा गांधी

पहला विश्व युद्ध आरंभ हुआ। राजनीति उतार पर थी। इसका कारण था कांग्रेस का तथाकथित गरम दल और नरम दल में विभाजन और युद्ध-काल में लागू किए गए नियम और प्रतिबंध।

अंततः विश्व युद्ध समाप्त हुआ और शांति के परिणामस्वरूप देश में राहत और प्रगति की बजाय दमनकारी कानून और पंजाब में मार्शल लॉ लागू हुआ। जनता में अपमान की कड़वाहट और क्रोध का आवेश भर गया। ऐसे समय में जब हमारे देश के पौरुष को लगातार कुचला जा रहा था; शोषण की लगातार निर्मम प्रक्रिया से हमारी गरीबी बढ़ रही थी और हमारी जीवन शक्ति क्षीण हो रही थी। किसान वर्ग दबू और भयभीत था, कारखाने के मजदूरों की स्थिति

भी बेहतर नहीं थी। मध्य वर्ग और बुद्धिजीवी लोग, जो इस सर्वग्रासी अंधकार में आकाशदीप हो सकते थे, खुद इस सर्वव्यापी उदासी में डूबे हुए थे।

और तब गांधी का आगमन हुआ। वे ताजा हवा के ऐसे झोंके की तरह आए जिसने फैलकर हमें गहरी साँस लेने के योग्य बनाया। वे ऊपर से अवतरित नहीं हुए थे, वे भारत की करोड़ों की आबादी के बीच से ही निकलकर आए थे। वे उन्हीं की भाषा बोलते थे और लगातार उनकी शोचनीय स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करते थे। उन्होंने हमसे कहा कि इन मजदूरों और किसानों की पीठ से उतर जाओ, तुम सब जो उनके शोषण के सहारे ज़िंदा हो उस व्यवस्था को समाप्त कर दो जो इस गरीबी और दुर्गति की जड़ है। उन्होंने जो कुछ कहा हमने उनमें से ज्यादातर बातों को आंशिक रूप में माना और कभी-कभी बिलकुल नहीं माना। लेकिन यह एक गौण बात थी। उनकी शिक्षा का सार था – निर्भयता और सत्य और इनसे जुड़ा हुआ कर्म। वे हमेशा सामान्य जनता की खुशहाली पर नज़र रखते थे।





0958CH06

दिये जल उठे

मधुकर उपाध्याय

रास के बूढ़े बरगद ने वह दृश्य देखा था। दांडी कूच की तैयारी के सिलसिले में वल्लभभाई पटेल सात मार्च को रास पहुँचे थे। उन्हें वहाँ भाषण नहीं देना था लेकिन पटेल ने लोगों के आग्रह पर 'दो शब्द' कहना स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा, "भाइयो और बहनो, क्या आप सत्याग्रह के लिए तैयार हैं?" इसी बीच मजिस्ट्रेट ने निषेधाज्ञा लागू कर दी और पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया। यह गिरफ्तारी स्थानीय कलेक्टर शिलिडी के आदेश पर हुई, जिसे पटेल ने पिछले आंदोलन के समय अहमदाबाद से भगा दिया था।

गांधी के रास पहुँचने के समय वह कानून लागू था जिसके तहत पटेल को गिरफ्तार किया गया था। सत्याग्रहियों ने अपनी ओर से तैयारी पूरी कर ली थी। अब्बास तैयबजी वहाँ पहुँच चुके थे कि गांधी की गिरफ्तारी की स्थिति में कूच की अगुवाई कर सकें। बोरसद से निकलने के बाद लगभग सभी आश्वस्त थे कि अब गांधी को जलालपुर पहुँचने तक नहीं पकड़ा जाएगा लेकिन तैयारी में कोई कमी नहीं थी।

रास में गांधी का भव्य⁵ स्वागत हुआ। दरबार समुदाय के लोग इसमें सबसे आगे थे। दरबार गोपालदास और रविशंकर महाराज वहाँ मौजूद थे। गांधी ने अपने भाषण में दरबारों का खासतौर पर उल्लेख किया। कुछ दरबार रास में रहते हैं पर उनकी मुख्य बस्ती कनकापुरा और उससे सटे गाँव देवण में है। दरबार लोग

रियासतदार¹ होते थे। उनकी साहबी थी, ऐशो-आराम की ज़िंदगी थी, एक तरह का राजपाट था। दरबार सब कुछ छोड़कर यहाँ आकर बस गए। गांधी ने कहा, "इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें।"

सत्याग्रही गाजे-बाजे के साथ रास में दाखिल हुए। वहाँ गांधी को एक धर्मशाला में ठहराया गया जबकि बाकी सत्याग्रही तंबुओं में रुके।

रास की आबादी करीब तीन हजार थी लेकिन उनकी जनसभा में बीस हजार से ज्यादा लोग थे। अपने भाषण में गांधी ने पटेल की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए कहा, “सरदार को यह सजा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने

सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े का उल्लेख किया और कहा कि कुछ मुखी और तलाठी ‘गंदगी पर मक्खी की तरह’ चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ¹ स्वार्थ भूलकर इस्तीफ़ा दे देना चाहिए।” उन्होंने कहा, “आप लोग कब तक गाँवों को चूसने में अपना योगदान देते रहेंगे। सरकार ने जो लूट मचा रखी है उसकी ओर से क्या अभी तक आपकी आँखें खुली नहीं हैं?”

गांधी ने रास में भी राजद्रोह की बात पर जोर दिया और कहा कि उनकी गिरफ्तारी ‘अच्छी बात’ होगी। सरकार को खुली चुनौती देते हुए उन्होंने कहा :

अब फिर बादल घिर आए हैं। या कहो सही मौका सामने है। अगर सरकार मुझे गिरफ्तार करती है तो यह एक अच्छी बात है। मुझे तीन माह की सजा होगी तो सरकार को लज्जा आएगी। राजद्रोही को तो कालापानी, देश निकाला या फांसी की सजा हो सकती है। मुझ जैसे लोग अगर राजद्रोही होना अपना धर्म मानें तो उन्हें क्या सजा मिलनी चाहिए?

जनसभा में गांधी ने ब्रितानी कुशासन का जिक्र किया। उन्होंने कहा, “इस राज में रंक से राजा तक सब दुखी हैं। राजे-महाराजे जैसे सरकार नचाती है, नाचने को तैयार हैं। यह राक्षसी राज है . . . इसका संहार³ करना चाहिए।” रास्ते में रेतीली सड़कों के कारण यह प्रस्ताव किया गया कि गांधी थोड़ी यात्रा कार से

कर लें। गांधी ने इससे साफ इंकार कर दिया। उनका कहना था कि यह उनके जीवन की आखिरी यात्रा है और “ऐसी यात्रा में निकलने वाला वाहन का प्रयोग नहीं करता। यह पुरानी रीति है। धर्मयात्रा में हवाई जहाज़, मोटर या बैलगाड़ी में बैठकर जाने वाले को लाभ नहीं मिलता। यात्रा में कष्ट सहें, लोगों का सुख-दुख समझें तभी सच्ची यात्रा होती है।”

نियमों के अनुसार उस दिन की यात्रा कनकापुरा में गांधी के भाषण के बाद समाप्त हो जानी चाहिए थी लेकिन इसमें परिवर्तन कर दिया गया। यह तय पाया गया कि नदी को आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ने पर पार किया जाए ताकि कीचड़ और दलदल में कम-से-कम चलना पड़े। रात साढ़े दस बजे भोजन के बाद सत्याग्रही नदी की ओर चले। अँधेरी रात में गांधी को करीब चार किलोमीटर दलदली ज़मीन पर चलना पड़ा। कुछ लोगों ने गांधी को कंधे पर उठाने की सलाह दी पर उन्होंने मना कर दिया। कहा, “यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।” तट पर पहुँचकर गांधी ने पैर धोए और एक झोपड़ी में आराम किया। आधी रात का इंतज़ार करते हुए।

मही के तट पर उस घुप, अँधेरी रात में भी मेला-जैसा लगा हुआ था। भजन मंडलियाँ थीं। दांडिया रास में निपुण दरबार थे। उनके गीत के बोल थे :

देखो गांधी का दांडिया रास
देखो वल्लभ का दांडिया रास
दांडिया रास, सरकार का नास . . .
देखो विट्टल का दांडिया रास
देखो भगवान का दांडिया रास . . .

(संचयन भाग-1, कक्षा-9)



4617CH08

गान्धी जी

سنه انیس سو اکیس (1921) کا ذکر ہے، میں ایل. ایل. بی. کا طالب علم تھا، گانڈھی جی میرے وطن میرٹھ میں تشریف لائے۔ مجھے اُن سے ملنے کا بڑا شوق تھا۔ آخر میری آرزو برآئی اور مجھے اُن کی خدمت میں حاضر ہونے کا موقع مل گیا۔ باتیں کرتے کرتے گانڈھی جی نے میری اچکن کی طرف اشارہ کر کے فرمایا:



”دبئی کیوں نہیں پہنتے؟“

میں نے عرض کیا: ”تین چار دبئی چیزیں مستقل طور پر استعمال کرتا ہوں۔“

دبئی آم کھاتا ہوں، دبئی پان کھاتا ہوں، دبئی آلو کھاتا ہوں اور دبئی شکر استعمال

کرتا ہوں، کیا یہ کافی نہیں؟“

گانڈھی جی نے بڑے زور سے قبضہ لگایا اور فرمایا: ”تب تو آپ کے لیے

دبئی کپڑا پہننا اور بھی آسان ہے، ایک ہی دبئی چیز کا تو اور اضافہ ہوگا۔“

اس کے بعد متعدد بار، کئی کئی برس کے وقفے سے مجھے گانڈھی جی کی خدمت میں حاضر ہونے کا موقع ملا۔ مگر

حیرت ہے کہ ہر مرتبہ مجھے دیکھتے ہی انھیں میری چار دبئی چیزوں میں اپنی اسی پانچویں چیز کا خیال آجاتا۔

(Class-VI, Apni Zaban, Chapter-8, NCERT Publication)



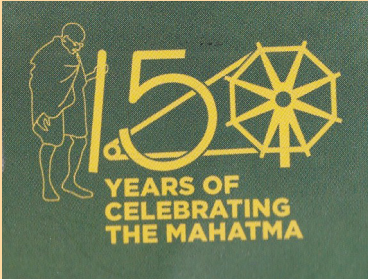
4814CH15

وطن کی طرف واپسی

(مہاتما گاندھی)

میں 1896 کے وسط میں پنگولا جہاز سے جو کلکتے جا رہا تھا، وطن روانہ ہوا۔ جہاز پر بہت کم مسافر تھے۔ ان میں سے دو انگریز افسر تھے جن سے مجھ سے بہت بے تکلفی ہو گئی۔ ان میں سے ایک کے ساتھ میں روزانہ ایک گھنٹے شطرنج کھیلا کرتا تھا۔ جہاز کے ڈاکٹر نے مجھے ایک کتاب دی جس کا نام تھا ”بے معلم کے تامل (تمل) سکھانے والی“ میں نے اس کتاب کو باقاعدہ پڑھنا شروع کر دیا۔ مجھے مثال میں تجربے سے یہ معلوم ہوا تھا کہ مجھے مسلمانوں سے خلا ملا پیدا کرنے کے لیے اُردو اور مدراسیوں سے میل جول رکھنے کے لیے تامل سیکھنا چاہیے۔ میرا ایک انگریز دوست بھی میرے ساتھ اُردو پڑھتا تھا۔ اس کی فرمائش سے میں نے تیسرے درجے کے مسافروں میں ایک اُردو کا ’منشی‘ ڈھونڈ نکالا اور ہم دونوں کی خوب پڑھائی ہونے لگی۔ اس انگریز کا حافظہ مجھ سے بہت اچھا تھا۔ وہ جو لفظ ایک بار دیکھ لیتا تھا، کبھی نہیں بھولتا تھا۔ مجھے اکثر اُردو حروف کے پہچاننے میں دقت ہوتی تھی۔ میں نے بہت زور لگایا مگر اس کے برابر کبھی نہیں پہنچ سکا۔

(Class-VIII, Apni Zaban, Chapter-15, NCERT Publication)



لوگ گاندھی جی کو مسیحا خیال کرنے لگے تھے۔ ایسا مسیحا جو دکھوں اور افلاس سے نجات دلانے میں ان کی مدد کر سکتا تھا۔ گاندھی جی مختلف طبقوں میں اتحاد قائم کرنا چاہتے تھے۔ وہ طبقاتی کشمکش کے مخالف تھے۔ اس کے ساتھ ساتھ کسان یہ سمجھتے تھے کہ زمینداروں کے خلاف جنگ میں گاندھی جی ان کی حمایت کریں گے اور زرعی مزدوروں کو یہ یقین تھا کہ گاندھی جی ان کو زمین مہیا کر دیں گے۔

(Class-VIII, Hamar Maazi-III, Chapter-9, NCERT Publication)

چوری اور اس کا کفارہ

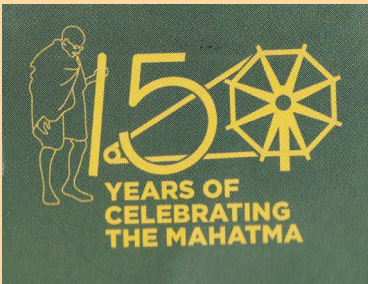


5012CH06

ہائی اسکول میں جن لڑکوں سے مجھ سے مختلف اوقات میں دوستی رہی ان میں سے دو قلبی دوست کہے جاسکتے ہیں۔ ایک سے میری دوستی زیادہ دن نہیں رہی۔ میں نے اُسے نہیں چھوڑا بلکہ اُس نے مجھے چھوڑ دیا، اس تصور پر کہ میں نے دوسرے سے میل جول پیدا کیا۔ اس دوسری دوستی کو میں اپنی زندگی کا ایک الم ناک واقعہ سمجھتا ہوں۔ یہ بہت دن قائم رہی۔ میں نے اسے اصلاح کے جوش میں شروع کیا تھا۔

میرا یہ رفیق اصل میں میرے بھلے بھائی کا دوست تھا۔ یہ دونوں ہم سبق تھے۔ میں اس کی کمزوریوں سے واقف تھا، مگر اسے وفادار دوست سمجھتا تھا۔ میری ماں نے، میرے بڑے بھائی نے، میری بیوی نے مجھے متنبہ کیا کہ تمہاری صحبت خراب ہے۔ بیوی کی بات تو میں شوہری کے غرور میں کب سنتا تھا، لیکن ماں اور بڑے بھائی کی رائے کے خلاف عمل کرنے کی مجھ میں ہمت نہ تھی۔ پھر بھی میں نے اُن سے عذر معذرت کی اور کہا ”میں جانتا ہوں کہ اس میں وہ کمزوریاں ہیں جو آپ نے بتائیں مگر آپ کو اس کی اچھائیوں کی خبر نہیں۔ وہ مجھے گمراہ نہیں کر سکتا کیوں کہ میں اس سے اس نیت سے ملتا ہوں کہ اس کی اصلاح کروں۔ مجھے یقین ہے کہ اگر وہ اپنے اطوار درست کرے تو بڑا اچھا آدمی ہو جائے گا۔ میری التجا ہے کہ آپ میری طرف سے تڑد نہ کریں۔“

(Class-X, Nawa-e-Urdu, Chapter-6, NCERT Publication)



ہندوستان کی آزادی سے مراد پورے ملک کی آزادی ہونی چاہئے۔ آزادی کی شروعات بالکل نچلی سطح سے ہو۔ چنانچہ ہر گاؤں ایک جمہوریت ہوگا۔ مزید یہ کہ ہر گاؤں کو خود اپنے وجود کو قائم رکھنا اور اپنے معاملات کو طے کرنے کے قابل بننا ہوگا۔ کئی گاؤں پر مشتمل اس ڈھانچے میں ہمیشہ وسیع ہونے والے اور بڑھنے والے حلقے ہوں گے۔ زندگی مثل اہرام کے ہوگی جس کی چوٹی اس کے نچلے حصہ پر قائم رہے گی۔

- مہاتما گاندھی

(Class-XI, Hindustani Aain our Kaam, chapter-8, NCERT Publication)



5186CH08

سچی زندگی، روحانی خوشی

میں نے سوچا کہ بمبئی کے سسلے ہوئے کپڑے جو میں پہنے ہوں انگلستان کی سوسائٹی کے قابل نہیں ہیں اس لیے میں نے آرمی اینڈ نیوی کی کوٹھی سے نئے کپڑے خرید لیے۔ ایک لمبی ریشمی ہیٹ بھی 19 شلنگ میں خریدی جو اُس زمانے کے لحاظ سے بڑی قیمتی تھی۔ مجھے اس پر بھی قناعت نہ ہوئی بلکہ دس پاؤنڈ ضائع کر کے ایک ایونگ سوٹ 'بونڈ اسٹریٹ' میں جو اس زمانے میں فیشن کا مرکز سمجھی جاتی تھی، سلوایا اور اپنے بھائی سے گھڑی کے لیے سونے کی دہری زنجیر منگوائی۔ بندھی بندھائی ٹائی لگانا فیشن کے خلاف تھا۔ اس لیے میں نے خود ٹائی باندھنے کی صنعت سیکھی۔ ہندوستان میں تو آئینہ میرے لیے بڑے تکلف کی چیز تھی۔ مجھے آئینہ دیکھنا صرف اُس دن نصیب ہوتا تھا جس دن گھر کا نائی میری ڈاڑھی مونڈتا تھا۔ یہاں میں روز دس منٹ ایک بڑے آئینے کے سامنے کھڑے ہو کر ٹائی ٹھیک کرنے اور مانگ نکالنے میں ضائع کرتا تھا۔ بد قسمتی سے میرے بال بھی نرم نہ تھے اور انھیں جمانے میں برش سے خاصی کشتی لڑنا پڑتی تھی۔ جب کبھی میں سر پر ٹوپی رکھتا تھا یا اتارتا تھا تو میرا ہاتھ خود بخود بال درست کرنے کے لیے سر پر پہنچ جاتا تھا۔ اس کے علاوہ ایک مہذب عادت یہ تھی کہ شائستہ سوسائٹی میں بیٹھا ہوتا تھا تو تھوڑی تھوڑی دیر کے بعد ہاتھ سر پر جا کر مشین کے پرزے کی طرح یہی عمل کر آتا تھا۔

مگر ان سب باتوں کے باوجود جو ایک جنٹلمین کے لیے ضروری ہیں، مجھ سے کہا گیا کہ ناچ، فرانسیسی زبان اور خطابت سیکھنا میرے لیے ضروری ہے۔ فرانسیسی نہ صرف ہم سایہ ملک کی زبان تھی بلکہ سارے بڑے اعظم یورپ میں سمجھی جاتی تھی جس کی سیاحت کا میں قصد رکھتا تھا۔ میں نے طے کیا کہ ایک رقاصہ کی کلاس میں ناچ سیکھوں گا۔ تین پاؤنڈ ایک ٹرم کی فیس ادا کروں گا۔ میں تین ہفتے میں کوئی چھ بار کلاس میں گیا لیکن یہ میرے بس کی بات نہ تھی کہ جسم کی حرکت میں موزونیت پیدا کروں۔ میں پیانو سمجھ نہیں سکتا تھا اس لیے تال کے ساتھ قدم رکھنا میرے لیے ناممکن تھا۔ اب میں کرتا تو کیا کرتا۔

ایک سادھو کا قصہ مشہور ہے کہ اس نے چوہوں کو بھگانے کے لیے بلی پالی، بلی کو دودھ پلانے کے لیے گائے رکھی، گائے پرانے کے لیے آدمی رکھا۔ غرض اسی طرح سلسلہ بڑھتا گیا۔ میرے حوصلے بھی اس سادھو کے خاندان کی طرح بڑھتے گئے۔ میں نے سوچا کہ مغربی موسیقی کا مذاق پیدا کرنے کے لیے واپس بجانا سیکھوں۔ اس لیے میں نے تین پاؤنڈ کا ایک واپس خریدنا اور سکھانے والے کی فیس میں بھی کچھ خرچ کیا۔ میں ایک تیسرے استاد کے پاس خطابت سیکھنے گیا اور ایک گئی ابتدائی فیس ادا کی۔ انھوں نے بیل کی کتاب 'کامل خطیب' نصاب کے طور پر مقرر کی اور میں نے اسے خرید لیا۔ پٹ کی ایک اسپینج سے میں نے ابتدا کی۔

संक्षिप्त...

A Week with Gandhi

In this pursuit of independence there is a musical harmony between Gandhi and millions of Indians. Great leaders must have this harmony; it is the source of their greatness. Winston Churchill has manifested it in many of his speeches. he says brilliantly what so many plain English citizens say crudely to their neighbors of say to themselves at night. You follow a leader who is you in a better edition. Gandhi is father and brother to millions of semi-naked, half-starved, not-too-intellectual peasants and workingmen who want to attain dignity and prosperity through national effort. He is a chip of their block. He also answers the prayers of innumerable highly cultured Indians and mightily industrialists who resent the foreign yoke or even the mere presence of an outside overlord. Gandhi's life is single-tracked; he wants a free India.

(A Week with Gandhi, Louis Fischer)

